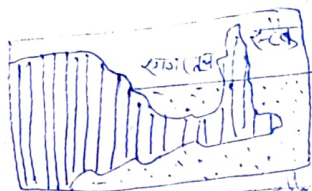


गुफा के अन्दर वायु के निरन्तर फैलाव व संकुचन से गुफा की कमजोर छत पर उच्च वायुदाब के कारण विद्र हो जाता है। जिससे वायु लहरों के रफ्तार में से जबकि बाहर निकलती है और आवाज करती है। इस विद्र को धमि विद्र कहते हैं।

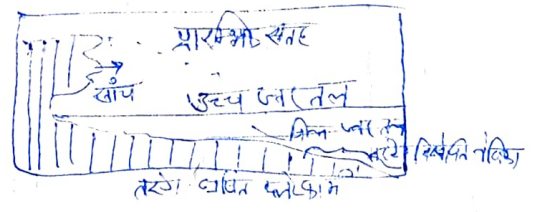
मैहराव व तटीय स्तम्भ - जब तटीय शैलों का कुछ भाग समुद्र के भीतर फैला हो और उसके बीच-बीच में घांमल चट्टानें आ गई हों, तो लहरें घांमल चट्टानों वाले अंश को काटकर उल्टे आर-पार सिद्र बना देती हैं। यह सिद्र फालान्ता में बड़े बड़े मैहराव का रूप ले लेती हैं। मैहराव जब अभी लहरों के अपरदन अथवा अन्य कारणों से मैहराव की छत टूटकर गिर जाती है, तो मुख्य चट्टान से उलका एक भाग उलका टूटकर स्तम्भ की भांति खड़ा रहता है, जिसे स्टेक कहते हैं।



तटीय स्तम्भ या स्टेक का निर्माण

अपतटीय खोपान: सागरीय जल कभी-कभी अपने तट को लम्बान्तर क्रम से काटता है और यह कटाव बढ़ते-बढ़ते सीढ़ीनुमा कटाव का रूप ले लेता है, जिसे अपतटीय खोपान कहते हैं।

तरंग ध्वस्त नदी - समुद्री लहरें तटीय भूभाग पर निरन्तर कटाव करती रहती हैं। इस कटाव के लगातार बढ़ते रहने से भूगु का ऊपरी लटका हुआ भाग टूट कर नीचे गिर जाता है। इसी प्रकार भूगु निरन्तर पीछे हटता रहता है। भूगु के सामने तटीय भाग पर जल के भीतर एक प्लेटफार्म बन जाता है जो तरंग ध्वस्त प्लेटफार्म कहलाता है।



निक्षेपण से निर्मित स्थलाकृति

सागरीय तरंगों अपने अपरदन के द्वारा तटीय भाग को काटती हैं और प्रायः जलवे को पाल के जलमग्न तटों पर निक्षेपण करते निक्षेपण प्रकार की स्थलाकृतियों का निर्माण करती हैं। निक्षेपण जलित तटीय दृश्यावली का सिद्धांत इस प्रकार है -

पुलिन - लहरें तटीय अपरदन से प्रायः जलवे को तट के समीप भंगती हैं।

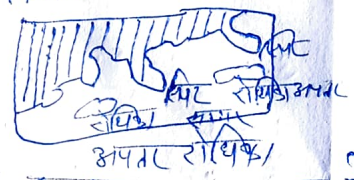
पर जमा कर देता है, जिससे मजबूत उथला हो जाता है जिसे पुलिन कहते हैं। पुलिन की रचना बालू, बंकड़ एवं पत्थरों से होती है।
कल्प पुलिन - अधिकतर सागरीय भाग में रेत जमाकर तथा बजरी के निक्षेप से सागर की ओर जाते हुए पतले-पतले बन्कों का निर्माण हो जाता है, जिसे कल्प पुलिन कहते हैं।

रोधी पुलिन - रोधी पुलिन लम्बे रूप में न होकर समानान्तर होती है।

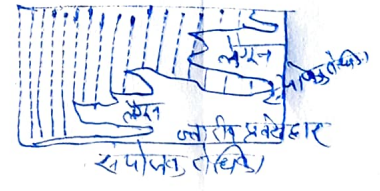
रोधिका तथा रोध - रोधिका निक्षेप निर्मित कटक या बाँध होते हैं, जिनका निर्माण लहरों एवं धाराओं के द्वारा किये जाये निक्षेपण से होता है। ये बाँध जब जल में डूबे होते हैं (ज्वार आदि के समय) तो उन्हें रोधिका कहते हैं, परन्तु जल से बाहर दिखाई देने वाला उठा हुआ कटक या बाँध रोध कहलाता है।

तरंग निर्मित प्लेटफार्म (बैंदी) - तरंगीय भाग के अपरदन से प्राप्त मलबे का निक्षेपण जलमग्न तट में एक पबूतरे के आकार में होता है, ये जल में डूबी रहती हैं, किन्तु कालान्तर में जल से बाहर भी निकल आती हैं, जिन्हें तरंगी निर्मित प्लेटफार्म कहते हैं।

अपतट रोधिका -> जब रोधिकाओं का निर्माण तट से दूर परन्तु प्रायः तट के समानान्तर रूप में होता है।



संयोजक रोधिका -> जब किसी रोधिका की रचना उक्त प्रकार से होती है कि वह तट के किन्हीं दो अन्तरीपों को जोड़ती हो, तो वह संयोजक रोधिका कहलाती है।



टोम्बोली -> जब रोधिका तट से किसी द्वीप को या शीर्षस्थल से किसी द्वीप को जोड़ती है, तो वह टोम्बोली कहलाती है।



डक व स्पिट -> जब रोधिका एक टोम्बोली से तट से जुड़ी हो एवं दूरी और अनुप्रस्थ (आर्क) रूप में सागर की ओर विस्तार के रूप में निकली-सी हो, तो उसे डक व स्पिट कहते हैं।



लूप -> जब डक का विस्तार होत-होत यह पुनः तट से आकर मिल जाता है तो उसे लूपलेनुमा आकार का लूप कहते हैं।

लूपलेनुमा रोधिका -> जब लूपनुमा रोधिका ओर सागर तट के बीच जल भर जाता है, तो उसे लूपलेनुमा कहते हैं।

Insel

Atoll

Lagune

Nehrung

Barriereinsel

Isthmus

Halbinsel

Landspitze

Meerenge

Fjord / Ria

Bucht

